IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्कंदपुराण में बदरिकाश्रम महात्म्य

डॉ पंकज पाण्डेय,
एसो0 प्रोफेसर (इतिहास)
श0दु0म0रा0स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोईवाला देहरादून ।

सारांश : हिंदू धार्मिक साहित्य में वर्णित 18 पुराणों में स्कंद पुराण सबसे अंतिम और बृहद् पुराण माना जाता है। कहा जाता है कि इसकी रचना सातवीं शताब्दी में हुई थी। एक प्रकार से यह पूर्ववर्ती पुराणों का पुनर्संपादित संस्करण है जिसमें भारत भर के तीर्थों, आचार विचार, धार्मिक आख्यानों और सांस्कारिक परम्पराओं का विस्तृत विवेचन है। यह पुराण पूरे देश का भौगोलिक वर्णन प्रस्तुत करता है। स्कंदपुराण का मूल रचनाकाल सातवीं शताब्दी माना जाता है, पर इसमें समय-समय पर सामग्री जुडती गई है। इसके वृहदाकार का यही कारण है । स्कन्द पुराण में बद्रिकाश्रम के महात्म्य का विशद वर्णन किया गया है ।

कुंजी शब्द : स्कन्द पुराण, बदरिकाश्रम, केदारखंड, नारायण

परिचय : स्कन्द पुराण खण्डात्मक और संहितात्मक दो स्वरूपों में उपलब्ध हैं । दोनो स्वरूपों में 81-81 हजार श्लोक परम्परागत रूप से माने गये हैं। खण्डात्मक स्कन्द पुराण में क्रमषः माहेश्वर, वैष्णव, ब्राह्म, काशी, अवन्ती (तापी और रेवाखण्ड) नागर तथा प्रभास-ये सात खण्ड हैं । संहितात्मक स्कन्दपुराण में सनत्कुमार, शंकर, ब्राह्म, सौर, वैष्णव और सूत-छः सहिताएं हैं।

इसके पहले खंड माहेष्वर खंड में केदानरनाथ का माहात्म्य, और दूसरे खंड में बदरिकाश्रम माहात्म्य समाहित हैं स्कंदपुराण का यह द्वितीय भाग अधिकांशतः तीर्थ पर ही आधारित है। बदरिकाश्रम आदि तीर्थ पार्थिव तीर्थ हैं । पार्थिव तीर्थ वे स्थल हैं जहां कभी किसी काल में कोई अविस्मरणीय तथा पवित्र घटना घटित हो चुकी है । उस पवित्र घटना के अणु आज भी वहां विद्यमान हैं । आजभी वहां उस घटना का साक्षीरूप स्पंदन विद्यमान है । वहां श्रद्धा तथा भाव के साथ जाने पर उस सूक्ष्मतत्व स्पंदन की ऊर्जा के द्वारा व्यक्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।[1]

यह आठ अध्यायों में समाहित है। इसमें बद्रीकाश्रम को त्रैलोक्य दुर्लभ ऐसा तीर्थ कहा गया है जिसके स्मरण से ही महापापी मनुष्य भी पाप रहित होकर मुक्तिलाभ प्राप्त करता है । भौगोलिक आधार पर गंगोत्री घाटी के पूर्व में ऊंची-ऊंची श्रेणियों हैं जिनमें 23410 फुट ऊंची बदरीनाथ श्रेणी भी एक है ।[2] घाटी के पूर्व अभ्य तीर्थों में दारूण तप द्वारा जो फल प्राप्त होता है वही फल एकमात्र म नही मन बदरी यात्रा का चिंतन करने से भी प्राप्त हो जाता है ।

बदर्याख्यं हरे क्षेत्रे त्रिषु लोकेषु दुर्लभं। क्षेत्रस्य स्मरणादेव महा पातिकिनो नराः।
विमुक्त किल्विषाः सद्यो मरणामुक्ति भागिनः।।

अन्य तीर्थे कृत येन तपः परम दारुणम तत्समा बदरी यात्रा मनसापि प्रजायते । [3]

स्कंद के अनुसार स्वर्ग, भूतल और रसातल में अनेक तीर्थ हैं, तथापि बदरी के समान न कोई तीर्थ है, ना होगा । सहस्त्र अष्वमेध, अथवा अन्य क्षेत्र में वायु भोजी होकर तप द्वारा जो फल मिलता है, वही फल क्षण भर में विषाला (बदरीनाथ का नाम विषालपुरी भी है) द्वारा प्राप्त हो जाता है ।

बहूनि सन्ति तीर्थानि दिवि भूमौ रसातले। बदरी सदृषं तीर्थं न भूतं नभविष्यति।।4
अश्वमेघसहस्त्राणिवायुभेजयेचयत्फलम् क्षेत्रान्तरे विषालायांतत्फलंक्षणमात्रतः।।

नारायण के कथन के माध्यम से पुराणकार कहता है- इस क्षेत्र के दर्षन मात्र से पापियों के पाप का नाष हो जाता है ।[5]

भगवान शिव के कथन को उद्धत करते हुए पुराणकार कहता है कि बदरी क्षेत्र अनादि सिद्ध है। इसके अधिष्ठाता साक्षात श्री हरि हैं ।

अनादिसिद्धमेतत्तु यथा वेदाहरेस्तनु। अधिष्ठाता हरिः साक्षान्नारद्वायैनिषैवितम।।6

शिव ने ब्रह्मा को अपनी रूपवती पुत्री के प्रति कामासक्त देख शिव ने उनका सिर काट लिया था, जिसके कारण उन्हें ब्रह्म हत्या का पाप लगा । शिव ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त होने के लिए ब्रह्मा के कपाल को हाथ में लेकर तीर्थ यात्रा के लिए निकले । अंत में विष्णु ने उन्हें पाप मोचन के लिए बदरी दर्षनार्थ जाने का उपदेश दिया । बदरी पहुंचते ही ये शाप मुक्त हुए और ब्रह्मा का कपाल उनके हाथ से छूट गया । तब से शिव भी वही निवास करते हैं ।
तस्योपदिष्टमादाय बदरी समुपागतः। तत्क्षणादब्रह्महत्या में वेपमाना मुर्हुमुहुः।
अन्त्तहितं कपालं तेत्राद्विगलितं गम। ततः प्रभृति तत्क्षेत्रं पार्वतया सह सादरम्।।[7]

पुराणकार शिव के कथन का उल्लेख करता हुआ कहता है की वाराणसी, श्री शैल, तथा कैलाष पर पार्वती के साथ निवास करने में उन्हें जो प्रसन्नता होती हैं, बदरी तीर्थ में निवास करने पर अनंतगुण अधिक प्रसन्नता होती है ।
बदरी में न केवल शिव ब्रह्महत्या से मुक्त हुए अपितु व्यास जी ने अग्निदेव को भी सर्वभक्षण के पाप से पापों से मुक्ति के लिए बदरी क्षेत्र में जाने का निर्देष दिया ।

तीसरे अध्याय में बदरी क्षेत्र में स्थित अग्नि तीर्थ, नारद शिलाऔर मार्कण्डेय शिला के माहात्म्य का वर्णन करते हुए पुराणकार शिव के कथन का उल्लेख करते हुए कहता है कि पातकी, महापातकी इस अग्नितीर्थ में स्नान कर बिना प्रयास शुद्धि प्राप्त करते हैं। समस्त तीर्थ इस अग्नितीर्थ की सेवा करते हैं । यह अतिगंह्य है । तुम्हारी भक्ति तथा आदर के कारण मैं इसे संक्षेप में कहता हूं। हे पुत्र पातकी, महापातकी पस अग्नितीर्थ में स्नान करके बिना प्रयास षुद्धि प्राप्त करते हैं । मरणांत पायष्चित से भी जो पाप दूरीभूत नहीं होता, अग्नितीर्थ में स्नानमात्र से वह दूर हो जाता है । जैसे अत्यंत मलिन स्वर्ण अग्नि में तपकर षुद्धि प्राप्त करता है उसी प्रकार अग्नितीर्थ में आकर सभी पाप दूरीभूत हो जाते हैं ।[8]

बदरी क्षेत्र में पांच पुण्य नारदी, नारसिंही, वाराही, गारूडी और मारकंडेयी नाम की पांच षिलाओं का उल्लेख करता हुआ पुराणकार उन पांच षिलाओं का पृथक-पृथक वर्णन करता हुआ उनके महत्व का उल्लेख करता है।
नारदी नारसिंही च वाराही गारुड़ी तथा।
मार्कण्डेयीति विख्याताः शिलाः सर्वार्थसिद्धिदाः।[9]

जिस शिलापर नारद ने कठोर-कठोर तप के फलस्वरूप उन्हें विष्णु के दर्षन और उनके चरणों अक्षय भक्ति का वरदान मिला था, उसे नारद शिलाकहा जाता है ।[10] जिस शिलापर अपने आप को अल्पायु जान कर मार्कण्डेय ऋषि ने

घोर तपस्या कर सात कल्प तक जीवित रहने का वरदान प्राप्त किया था उसे उनके नाम से मार्कंडेय शिलानाम दिया गया है।

षशिष्टवर्षसहस्त्राणिषिलाायांवृखवृत्तिमान् ।
तदाऽसौभगवयान्विष्णुस्त्रब्राह्मणरूपधृक्।[11]

इसीलिए सनातम धर्म को मानने वाले परिवारों में बच्चे की लम्बी आयु के लिए उसके जन्मदिन के अवसर पर मार्कण्डेय पूजा की जाती है।

चैथे अध्याय में गारुडी, वाराही, नारसिंही शिलाओं के महात्म्य का वर्णन है । गरुड़ ने भगवान विष्णु का वाहन बनने की कामना से बदरीनाथ के दक्षिण में स्थित गन्धमादन पर्वत पर कठोर तपकर विष्णु के दर्शन किए और उनकी पूजा के लिए त्रिपथगा गंगा का आह्वान किया और विष्णु का वाहन बनने का वरदान मांगा और जिस शिलापर बैठ कर उन्होंने घोर तप किया था उस शिलाका नाम उनके नाम से गरूड़ शिला रखने की विनती की ।

एवं स्तुत्तस्ततः साक्षाद्गरुडेन महात्मना। पूजार्थमाजुहावैनां गंगा त्रिपथगामिनीम्।।19।।
ततः पंचमुखी साक्षदाविरासीन्नगोपरि। तेनोदकेन पादार्ध चकार विनतासुतः।।20।।
व्रियतांबर इत्युत्तो गरूणा हरिणा ततः। तवैकवाहनः श्रीमानबलवार्यपराक्रमः।
अजेयो देवदैत्यानां स्यामहं ते प्रसादतः ।।21।।
इयं मन्नामविख्यातसर्वपापहरषिला। एतस्याः मरणात्पुंकविषव्याधिर्नजायताम्।22।।[12]

नारसिंही शिलाहिरण्य कषिपु के वध के लिए भगवान विष्णु अपने द्वारा धारण किए गए भयानक रूप को शमित करने के लिए जाह्नवी के जल में स्नान कर फिर से प्रशांतमु द्रा धारण कर जिस शिलापर आसनस्थ हुए उसे नरसिंह शिलानाम दिया गया ।

यदिप्रसन्नोभ्गवान्कृप्याजगताम्पते। विषलान परित्ज्यावरोऽस्माकमभीप्सितः।।41।।
एवमस्तु ततः सर्वे स्वाश्रमं ह्यषयोययु। नृसिंहोडपि षिलारूपी जलक्रीड़ापरोऽभवतः।।50।।
डपवासत्रयं कृत्वा जपध्यानपरायण। नृसिंहरूपिणं साक्षात्पष्यत्येव न संषयः ।।51।।
य एतच्छुद्धया मत्र्यः श्रुणोति श्रावयंछसि।
सर्वपापविनिर्मुक्तो वैकुण्ठे वसतिं लभेत।।52।।

पांचवे अध्याय में बदरिकाश्रम की सर्वोत्तम तीर्थ के रूप में मान्यता का उल्लेख करते हुए उसकी महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है बदरी क्षेत्र में विष्णु का रंच मात्र नैवेद्य ग्रहण करने से सभी पापों से उसी प्रकार शुद्धि प्राप्त हो जाती है, जैसे अग्नि में तपाने में स्वर्ण शुद्ध हो जाता है। भगवान भी नारदादि ऋषियों के साथ जो अन्न गहण करते हैं, जीवन शुद्धि के लिए बिना विचार किये सभी को उस अन्न को ग्रहण करना चाहिए देवता भी रूप बदल कर बदरी वन में आकर उस अन्न को ग्रहण करते हैं। अन्य तीर्थों का सेवन करने से भी मुक्ति मिलती है पर बदरी वन में अन्न का ग्रहण करने मात्र से ही विष्णु का लोक प्राप्त होता है ।

तीर्थनतरेषुं यत्नेन मुक्तिं गच्छति मानवः। नैवेद्यभवक्षणाद्विष्यों सालोक्यंलभतेनरः।।44।।
हृदि रूपं मुखें नाम नैवेद्यमुदरे हरेः। पादोदकः सनिर्माल्यं मस्तके यस्य सोऽच्युतः।।45।।
ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयंगुंर्वगगनागमः। नैवेद्यभक्षणाद्विष्णोर्बदर्यांयान्ति सड्क्षयम्।।46।। [14]

बदरी माहात्म्य के छठे अध्याय में सरस्वती नदी, ब्रह्मकुण्ड तीर्थ और बसुधारा के महात्म्य का वर्णन किया गया है। ब्रह्मकपाली ऐसा पितृतीर्थ है जो गया से आठ गुणा अधिक फल देता है। जो व्यक्ति सरस्वती नदी का दर्षन, स्पर्षन, स्नान, पूजन, स्तुति करता है उसके कुल में सरस्वती सदा विराजमान रहती है। उसके कुल में कोई भी मूर्ख पैदा नहीं होता। सभी ज्ञानी होते हैं ।

त्रयणामापि लोकानां हिताय जगताम्पतिः।

स्थापयामास विधिना वाणीं वाग्विभवप्रदाम् ।।39।।

दर्शनस्पर्षनस्नानपूजास्तुत्यभ्विन्दनैः। सरस्वत्या न विच्छेदःकुलेतस्य कदाचन।।40।।
मंत्रसिद्धिर्विशेषेण सरस्वत्यातटे नृणाम। जपतामचिरेणैवजायतेनाऽत्र संषयः।41।।[15]

इस मानसोद्भव तीर्थ के पष्चिम में अत्यंत मनोहर वसुधारा तीर्थ है इस तीर्थ में स्नान, जलपान तथा जनार्दन की अर्चना से इह लोक में सुख तथा परलोक में रूप और उत्तम पद प्राप्त होता है ।

त्रिलोक्या सर्वतीर्थेभ्यः श्रेष्ठो बदरिकाश्रमः। श्रुत्वातन्नारदात्सर्वेवसवः समुपागताः।।61।।
त्रिंषद्वर्षसहस्त्राणि तपः परमदारूणम्। दलाम्बुप्राषनाषच्कुस्ततः सिद्धिमुपाययुः।62।।

भगवद्दर्षनात्प्राप्तानन्दनिर्वृत्तविल्लमाः।। हृदयानन्दसन्दोहप्रफुल्लितमुखाम्बुजाः।।63।।
दृष्ट्वा नारायण देवं देव वरं लब्धवा मनोरमम्
हरिभक्तिसुखष्वय्र्यं परं लब्ध्वामुदं ययुः।।64।।
अत्र स्नात्वा जलं पीत्वा पूजयित्वा जनार्दनम्
इह लोके सुखं भुक्त्या यात्यन्ते परमं पदम् ।।65।।[16]

सातवें अध्याय में पांच धारा तीर्थ की महिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है कि इन धाराओं में स्नान करने से पुष्कर, प्रभास, गया, नैमिषारण्य और कुरुक्षेत्र में स्नान करने का पुण्यफल प्राप्त हो जाता है।

न तेषाः पुनरावृत्तिः कल्पकोटिषतैरपि। त्रिरोत्रेणस्थितोभूत्वा पूजयित्वाजनार्दनम्।34।।
जपं कुर्वन्विषेषेण मन्त्रसिद्धिः प्रजायते। कर्मणा मनसावाचा यत्कृतंपातकं नृभिः।।35।।[17]

आठवें आध्याय ब्रह्मकुण्ड के दक्षिण में स्थित नरावास पर्वत के समीप भगवान द्वारा मेरु पर्वत की स्थापना का उल्लेख है । उसके बाद ब्रह्मावर्त तीर्थ का उल्लेख करते हुए पुराणकार कहता है कि इस तीर्थ माहात्म्य का श्रवण करने मात्र से ही राजा को विजय, संतान की कामना करने वाले को पुत्र, पति की कामना करने वाली कन्या को उत्तम पति और धनार्थी को धन प्राप्त होता है । इस प्रकार यह सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। इस महात्म्य का एक मास तक ध्यानपूर्वक श्रवण करने वाले व्यक्ति की दुर्लभ कामनाएँ भी पूर्ण होती है ।
राजा विजयमाप्नोति सुतार्थी लभते सुतम्।
कन्यार्थी लभते कन्या कन्या विन्दति सत्यपित्।।52।।
धनार्थी धनमाप्नोति सर्वकामैकसाधनम् ।।53।।
मसमात्र नरोभक्तयाशृणुयाद्यः समाहित। तस्याभीष्टसमावाप्तिर्दुर्लभाऽपि नसंषयः।।54।।[18]

स्कंद पुराण के अनुसार इसे चारों युगों में विभिन्न नामों से अभिहित किया जाता है, यथा मुक्तिप्रदा (सत्ययुग) योगसिद्धा (त्रेता) विषाला (द्वापर) बदरिकाश्रम (कलियुग)।

कृते मुक्ति प्रदा प्रोक्ता, त्रेतायां योग सिद्धदा।
विषाला द्वारपरे प्रोक्ता कलौ बदरिकाश्रमः।।[19]

केदारखंड के बदरीकाश्रम- महात्म्य नामक उपखंड में अनेक आख्यान हैं। जिसमें अनेक तीर्थों, पुण्यस्थलों, कुण्डों, धाराओं, षिलाओं का वर्णन किया गया है। उसमें कहा गया है कि मूलतः यह शिव क्षेत्र था। स्कन्द के माहेश्वर खंड के तृतीय उपखंड 'अरुणालय महात्म्य' के उत्तरार्द्ध में केदार के वर्णन के साथ इसके विषय में कहा गया है-

सर्वसिद्धिकरं पुंसां क्षेत्रं बदरिकाश्रमम्।
यत्रास्ते श्यम्बको देव्या नरनारायणार्चितः।।27।।[20]

वस्तुतः स्कंदपुराण में वर्णित बदरीनाथ पुराणों में विशालपुरी के नाम से भी वर्णित है । यहां के मंदिरों के संबंध में पौराणिक संकल्पना महात्म्य वर्णन की भले ही हो पर यदि ऐतिहासिक तथ्यों के आलोक में यह माना जा सकता है कि यह मन्दिर नागरशैली का है। इसका निर्माण संभवतः 15वीं-16वीं शताब्दी के आसपास का रहा होगा ।

संदर्भ :

1- खंडेलवाल एस.एन. निवेदन वैष्णवखंड, स्कंदपुराण,
2- अशोक यमुनादत्त वैष्णव, कुमाऊँ और गढ़वाल के दर्शनीय स्थल, पृ0सं0 15,
3- श्लोक 53-54 प्रथमोध्यायः श्रीबदरिकाश्रममहात्म्यारंभः वैष्णवखंड, स्कंदपुराण,
4- श्लोक 55-56, प्रथमोध्यायः श्रीबदरिकाश्रममहात्म्यारंभः वैष्णवखंड, स्कंदपुराण,
5- श्लोक 41-43, द्वितीयोध्यायः, श्रीबदरिकाश्रममहात्म्यारंभ, वैष्णवखंड, स्कंदपुराण,
6- श्लोक 2-3 द्वितीयोध्यायः, श्रीबदरिकाश्रममहात्म्यारंभ, वैष्णवखंड, स्कंदपुराण,
7- श्लोक 8-9 द्वितीयोध्यायः, श्रीबदरिकाश्रममहात्म्यारंभ, वैष्णवखंड, स्कंदपुराण,
8- अतिगुह्यतमं तीर्थं सर्वतीर्थनिवेषितम्। संक्षेपात्कथ्याभ्यतेवत्तावाऽऽदरवषादहम्।।
महापातकीनोयेचअतिपातकिनस्तथा। स्नानमात्रेण शुद्धयन्तिविनायाऽऽयासेन पुत्रक!।।
प्रायष्चित्तेनयत्पापंनच्छैन्मरणान्तिेम्। स्नानमात्रेण तीर्थस्यपावकस्यविषुद्धयति।।
अत्यन्तमलसंबद्धं यथाषुद्धयति हाटेकम्। तथाग्नितीर्थमासाद्यदहीपापैर्विषुद्यति।
9-।20। तृतीयोध्यायः वही
10- नारदो भगवांस्तेपे तपः परमादारुणम्। दर्षनार्थ महाविष्णोंः षिलायांवायुभेजनः
।21।। तृतीयाध्यायः वहीं
11- ।।22।। तृतीयोध्यायः, वही
12- ।।19-22।। चतुर्थोध्यायः, वही
13-।।49-52।। चतुर्थोध्यायः, वही
14-।।44-46।। पंचमोध्यायः, वही
15-।।39-41।। षष्ठोध्याय, वही
16-।।61-65।। षष्ठोध्याय, वही
17-।।34-35।। सप्तमोध्याय, वही
18-।।52-54।। अष्टमोध्याय, वही
19- स्कन्द पै.द्वि. 1.57
20- शर्मा डी.डी. उत्तराखण्ड ज्ञानकोष, पृष्ठ-468